पाठ सूची–सह–साप्ताहिक विच्छेदित पाठ्यक्रम

कक्षा – 8 : विषय – नागरिक शास्त्र (सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था–III)

क्रम संख्या	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या	माह	सप्ताह	पाठ के उप विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या	सोखन के प्रतिफल
1	संविधान	1–10	अप्रैल	प्रथम	भारतीय संविधान के आयाम, संघवाद, संसदीय शासन पद्धति	1–2	• भारतीय संविधान के महत्वपूर्ण आयामों की चर्चा करते हैं। • मौलिक अधिकार और मौलिक कर्त्तव्यों को समुचित उदाहरणों से स्पष्ट करते हैं।
				द्वितीय	स्वतंत्र एवं निष्पक्ष न्यायपालिका, मौलिक अधिकार	3–5	
				तृतीय	मौलिक कर्तव्य, धर्मनिरपेक्षता, मानवाधिकार	5–9	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति	9–10	
			मई	प्रथम			
				द्वितीय	पुनरावृत्ति		{ पृ.सं. 01–10 }
				तृतीय			
				चतुर्थ	ग्रीष्मावकाश		गृह कार्य { पृ.सं. 01 – 10 }
			जून	प्रथम			
				द्वितीय			
				तृतीय	पुनरावृत्ति		{ पृ.सं. 01–10 }
				चतुर्थ			
2	भारतीय संविधान के आधारभूत मूल्य	11–19	जुलाई	प्रथम	संप्रभुता, समाजवाद, धर्मनिरपेक्ष या पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्र	11–13	• भारतीय संविधान के आधारभूत मूल्यों से अवगत होते हैं। • भारत के संविधान के संदर्भ में अपने क्षेत्र में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों का विश्लेषण करते हैं।
				द्वितीय	गणराज्य, न्याय, स्वतंत्रता	13–15	
				तृतीय	समानता, बंधुता, व्यक्ति की गरिता, राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता, राष्ट्रपति के संबंध में कुछ रोचक जानकारी	15–17	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति	18–19	
3	संसदीय शासन व्यवस्था	20–31	अगस्त	प्रथम	विकास एवं परिचय, भारत में संसदीय शासन व्यवस्था क्यों अपनायी गयी	20–22	• संसदीय एवं अध्यक्षीय शासन प्रणाली में अंतर करते हैं। • राज्य के संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के मानचित्र पर अपना निर्वाचन क्षेत्र पहचान सकते हैं और स्थानीय सांसद का नाम जानते हैं। • लोकसभा के चुनाव की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं।
				द्वितीय	संसद, राष्ट्रपति, राज्य सभा, लोकसभा	22–27	
				तृतीय	संसद का सदस्य, सरकार पर नियंत्रण, कानून	27–29	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति	30–31	
4	न्यायपालिका	32–42	सितम्बर	प्रथम	न्यायपालिका की भूमिका, सर्वोच्च न्यायालय	32–34	• भारत की न्यायिक प्रक्रिया का वर्णन करते हैं। • एक प्रथम सूचना रिर्पोट (एफ.आई.आर) दर्ज करने की प्रक्रिया को प्रदर्शित करते हैं। • जनहित याचिका के बारे में जानते हैं।
				द्वितीय	उच्च न्यायालय, जिला व अधीनस्थ न्यायालय, दीवानी एवं फौजदारी मामले	34–37	
				तृतीय	स्वतंत्र न्यायपालिका क्या होती हैं, भारत का हरेक व्यक्ति न्यायालय की शरण में जा सकता है, जनहित याचिका, अभ्यास, पुनरावृत्ति	37–42	

				चतुर्थ	संभावित प्रथम योगात्मक मूल्यांकन		
5	सामाजिक न्याय	43–54	अक्टूबर	प्रथम	सामाजिक न्याय के तत्व, अस्पृश्यता, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति अधिनियम, 1989	43–45	• सामाजिक न्याय की अवधारणा को समझते हैं। अपने क्षेत्र के सुविधा वंचित वर्गों की उपेक्षा के कारणों और परिणामों का विश्लेषण करते हैं। • राजनीतिक, आर्थिक, और सामाजिक समानता के बीच अंतर करते हैं। • समानता के अधिकार के संदर्भ में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों की व्याख्या करते हैं।
				द्वितीय	हाशियाकरण, जनजाति और हाशिकारण, जनजाति और विकास	46–49	
				तृतीय	अल्पसंख्यक और हाशियाकरण, समानता	50–33	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति	53–54	
6	आर्थिक क्षेत्र में सरकार की भूमिका	55–67	नवम्बर	प्रथम	जनसुविधाएँ, शिक्षा, में सरकार की भूमिका, स्वास्थ्य	55–58	• पानी, बिजली, सड़क, साफ–सफाई जैसी जन–सुविधाएँ उपलब्ध कराने में सरकार की भूमिका की पहचान करते हैं। • आर्थिक गतिविधियों के नियमन में सरकार की भूमिका का वर्णन करते हैं।
				द्वितीय	पेयजल एवं स्वच्छता, आवास, परिवहन	58–63	
				तृतीय	सामाजिक सुरक्षा, सरकार को जनसुविधाओं के लिए पैसा कहाँ से मिलता है, केन्द्रीय सरकार के कर राजस्व का विभाजन	63–65	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति	66–67	
7	सामाजिक समस्याएँ	68–80	दिसम्बर	प्रथम	बाल विवाह, पत्र का जवाब, गुरुजी की अदालत	68–71	• बाल–विवाह, बाल–श्रम, नशाखोरी एवं मानव तस्करी जैसी सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक होते हैं। • मौलिक अधिकारों की अपनी समझ से किसी दी गई स्थिति जैसे – बाल अधिकार के उल्लंघन, संरक्षण और प्रोत्साहन की स्थिति को समझते हैं।
				द्वितीय	रोहित की कहानी, नशाखोरी, मानव तस्करी या बाल तस्करी बाल	72–81	
				तृतीय	अभ्यास, पुनरावृत्ति	82–83	
				चतुर्थ	शीतकालीन अवकाश		गृह कार्य { पृ.सं. 43 – 79 }
			जनवरी	प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ	पुनरावृत्ति		{पृ. सं. 01 – 83}
			फरवरी	प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ	पुनरावृत्ति		{पृ. सं. 01 – 83}
			मार्च	प्रथम द्वितीय तृतीय	पुनरावृत्ति		{पृ. सं. 01 – 83}
				चतुर्थ	पुनरावत्ति एवं द्वितीय योगात्मक मूल्यांकन		
मार्च : पुनरावत्ति एवं द्वितीय योगात्मक मूल्यांकन							

पाठ सूची–सह–साप्ताहिक विच्छेदित पाठ्यक्रम

कक्षा – 8 : विषय – इतिहास (आधुनिक भारत)

क्रम संख्या	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या	माह	सप्ताह	पाठ के उप विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या	सीखने के प्रतिफल
1	आधुनिक काल में भारत का इतिहास	1–13	अप्रैल	प्रथम	आधुनिक काल में भारत का इतिहास, इतिहास में तारीख का महत्त्व, विज्ञापनों का रुचियों पर प्रभाव	1–4	• स्रोत के इस्तेमाल, भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त नामावली और व्यापक बदलावों के आधार पर आधुनिक काल का मध्यकाल और प्राचीनकाल से अंतर करते हैं।
				द्वितीय	तारीखें क्यों हो जाती है महत्त्वपूर्ण, आधुनिक भारत के भौगोलिक भूभाग, कैसे तय की जाती है अवधियाँ	4–6	
				तृतीय	औपनिवेकिता क्या है, आधुनिक ऐतिहासिक स्रोत, सर्वेक्षण का प्रचलन, अधिकृत रिकार्ड्स	7–11	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति	12–13	
2	व्यापार से साम्राज्य तक	14–28	मई	प्रथम	ईस्ट इंडिया कंपनी का आगमन, कंपनी की गतिविधियाँ, बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी, युद्ध की ओर, प्लासी का युद्ध, कंपनी के अफसों का लक्ष्य, कंपनी का फैलता साम्राज्य, शेर–ए–मैसूर टीपू सुल्तान।	14–21	• इंगलिश ईस्ट इंडिया कंपनी कैसे सबसे प्रभावशाली शक्ति बन गई बताते हैं।
				द्वितीय	मराठों के साथ संघर्ष, सर्वोच्चता का दावा, विलय का सिद्धांत, नये शासन की व्यवस्था, कंपनी की सेना, झारखंड में कंपनी का प्रवेश	22–28	
				तृतीय	अभ्यास एवं पुनरावृत्ति	27–28	
				चतुर्थ	ग्रीष्म अवकाश	गृह कार्य { पृ.सं. 01 – 28 }	
			जून	प्रथम			
3	ग्रामीण जीवन एवं समाज	29–43		द्वितीय	कंपनी की आय, अंग्रेजी की भू–राजस्व व्यवस्था, स्थायी बंदोबस्ती के दोष, महालवाडी, व्यवस्था	29–33	• देश के विभिन्न क्षेत्रों में औपनिवेशिक कृषि नीतियों के प्रभाव में अंतर बताते हैं, जैसे – नील विद्रोह।
				तृतीय	रैयतवाड़ी व्यवस्था, व्यावसायिक फसलों पर जोर, भारत में नील उत्पादन, ब्रिटेन की बढ़ती दिलचस्पी, नील की निज खेती में परेशानी, रैयती जमीन पर खेती, नील विद्रोह	33–39	
				चतुर्थ	कैसे होता था नील का उत्पादन, अभ्यास, पुनरावृत्ति।	40–43	
4	उपनिवेशवाद एवं आदिवासी समाज	44–57	जुलाई	प्रथम	मानचित्र, जनजातीय समूह किस प्रकार की आजीविका में संलग्न थे।	44–48	• 19वीं शताब्दी में विभिन्न आदिवासी समाज के रूपों और पर्यावरण के साथ उनके संबंधों का वर्णन करते हैं। • आदिवासी समुदायों के प्रति औपनिवेशिक प्रशासन की नीतियों की व्याख्या करते हैं।
				द्वितीय	19वीं सदी में आदिवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थित में परिवर्तन, वन कानून और उनके प्रभाव।	48–51	
				तृतीय	व्यापार की समस्या, काम की तलाा, आदिवासी विद्रोह, बिरसा मुण्डा का उलगुलान, संथाल विद्रोह, खरवार विद्रोह।	51–54	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति	55–57	
5	शिल्प और उद्योग	58–75	अगस्त	प्रथम	भारतीय कपड़े और विश्व बाज़ार, यूरोप के बाज़रों में भारतीय कपड़े, बुनकर कौन थे, भारती कपड़े का पतन	58–65	• औपनिवेशिक काल के दौरान पहले से मौजूद उद्योग केंद्रों और हस्तशिल्प उद्योगों के पतन और नए उद्योग केंद्रों और उद्योगों के विकास का विश्लेषण करते हैं।
				द्वितीय	सूती कपड़ा मिलों का उदय, टीपू सुल्तान की तलवार और वुट्ज़ स्टील गाँवों की उजड़ी हुई भट्टियाँ	65–70	
				तृतीय	एक व्यापक उद्योग हेवी इंजीनियरिंग कॉरपोरेशन	70–73	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति।	74–75	
6	1857 की क्रांति	76–90	सितम्बर	प्रथम	1857 ई. की क्रांति के कारण	76–80	• 1857 के विद्रोह की शुरूआत, प्रकृति, फैलाव और उससे मिले सबक का वर्णन करते हैं। • झारखण्ड में 1857 के विद्रोह की शुरूआत, फैलाव व प्रभाव का वर्णन करते है।
				द्वितीय	1857 की क्रांति का आरंभ और प्रसार, विद्रोह का स्वरुप, विद्रोह का अंत	81–84	
				तृतीय	क्यों असफल रहा विद्रोह, विद्रोह के परिणाम, 1857 ई. की क्रांति एवं झारखंड, अभ्यास, पुनरावृत्ति।	84–90	
				चतुर्थ	संभावित प्रथम योगात्मक मूल्यांकन		
7	ब्रिटिश काल में शिक्षा	91–102	अक्टूबर	प्रथम	प्राच्यवाद की परंपरा, व्यवसाय के लिए शिक्षा–वुड्स डिस्पैच	91–95	• भारत में नई शिक्षा प्रणाली के संस्थानीकरण के बारे में बताते हैं।
				द्वितीय	स्थानीय पाठशालाओं पर ब्रिटिश ज्ञान का क्या प्रभाव पड़ा, एक ग्रामीण पाठशाला	95–96	

				तृतीय	अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव, झारखंड में मिशनरीज शैक्षणिक संस्थान, टैगोर का शांति निकेतन	96–100	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति	101–102	
8	महिलाओं की स्थिति में सुधार	103–114	नवम्बर	प्रथम	प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति, बदलाव की सुगबुगाहट	103–105	• महिला, विधवा, पुनर्विवाह, बाल विवाह, सामाजिक सुधार से जुड़े मुद्दों और इन मुद्दों पर औपनिवेशिक प्रशासन के कानूनों और नीतियों का विश्लेषण करते हैं।
				द्वितीय	सती प्रथा का अंत, विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह	106–108	
				तृतीय	शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं के बढ़ते कदम	109–112	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति।	113–114	
9	जाति व्यवस्था की चुनौतियाँ	115–126	दिसम्बर	प्रथम	सामाजिक जीवन में जाति व्यवस्था, समाज सुधार के प्रयास, समानता और न्याय की माँग, ज्योतिराव फुले और गुलामगीरी	115–120	• जाति, सामाजिक सुधार से जुड़े मुद्दों और इन मुद्दों पर औपनिवेशिक प्रशासन के कानूनों और नीतियों का विश्लेषण करते हैं।
				द्वितीय	मंदिरों में प्रवेश के लिए आन्दोलन, गैर ब्राह्मण आन्दोलन, सुधारों के लिए संगठित होना	120–124	
				तृतीय	अभ्यास, पुनरावृत्ति।	125–126	
				चतुर्थ	शीत कालीन अवकाश	गृह कार्य { पृ.सं. 91 – 125 }	
10	राष्ट्रीय आंदोलन	127–146	जनवरी	प्रथम	राष्ट्रवाद का उदय, राष्ट्रीय आंदोलन के चरण, बंगाल का विभाजन, द्वितीय चरण 1905–19196, तृतीय चरण 1919–1947	127–134	• 1857 के दशक से लेकर आजादी तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा तैयार करते हैं। • राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में बदलावों का विश्लेषण करते हैं।
				द्वितीय	रॉलेट एक्ट, जलियाँवाला बाग हत्याकांड, खिलाफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन के बाद, सविनय अवज्ञा आंदोलन	134–138	
				तृतीय	भारत छोड़ो आंदोलन, स्वतंत्रता और विभाजन, सविनय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो आंदोलन के मय झारखंड, विभाजन के बाद, स्वतंत्रता संघर्ष में महिलाएँ, सुभाष चंद्र बोस, टाना भगत का आंदोलन,	138–143	
				चतुर्थ	दिशोम गुरू और अबुआ राज, रामगढ़ अधिवेशन–1940	144–148	
11	झारखंड में हॉकी	147–158	फरवरी	प्रथम	हॉकी की शुरूआत, भारत में हॉकी	149–151	• बच्चे राष्ट्रीय खेल हॉकी से अवगत होते हैं • भारत एवं झारखण्ड में इसके विकास तथा उसके प्रमुख पुरूष व महिला खिलाड़ियों के बारे में जानते हैं।
				द्वितीय	हॉकी का प्रसार, हॉकी के प्रारंभिक दिन, हॉकी स्टिक का जुगाड़	152–155	
				तृतीय	झारखंड के हॉकी खिलाड़ी, जयपाल सिंह मुंडा, महिला हॉकी में झारखंड	156–158	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति।	159–160	
			मार्च	प्रथम	पुनरावृत्ति		
				द्वितीय	पुनरावृत्ति		
				तृतीय	पुनरावृत्ति		
				चतुर्थ	द्वितीय योगात्मक मूल्यांकन		
मार्च : पुनरावृत्ति एवं द्वितीय योगात्मक मूल्यांकन							

पाठ सूची–सह–साप्ताहिक विच्छेदित पाठ्यक्रम

कक्षा–8 : विषय– भूगोल (हमारे संसाधन)

क्रम संख्या	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या	माह	सप्ताह	पाठ के उप विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या	सीखने के प्रतिफल
1	संसाधन	1–9	अप्रैल	प्रथम	संसाधन, संसाधन के प्रकार	1–3	• पृथ्वी पर प्राकृतिक तथा मानव निर्मित संसाधन को समझते हैं।
				द्वितीय	विकास और उपयोग के आधार पर, उत्पति के आधार पर, उपयोग के आधार पर	3–5	
				तृतीय	मानव निर्मित संसाधन, मानव ससाधन, संसाधन संरक्षण	5–7	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति	8–9	
			मई	प्रथम	पुनरावृत्ति	{ पृ.सं. 01 – 09 }	
				द्वितीय	पुनरावृत्ति		
				तृतीय	पुनरावृत्ति		
				चतुर्थ	ग्रीष्म अवकाश	गृह कार्य { पृ.सं. 01 – 08 }	
			जून	प्रथम			
2	मृदा, जल, प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीव संसाधन	10–24		द्वितीय	भूमि, भूमि उपयोग, मृदा, मृदा निर्माण के कारक, मृदा परिच्छेदिका, झारखंड में मृदा वर्गीकरण, मृदा का निम्नीकरण, मृदा के निम्नीकरण में सहायक कारक	10–14	• पृथ्वी पर प्राकृतिक तथा मानव निर्मित संसाधनों के असमान वितरण का विश्लेषण करते हैं। • सभी क्षेत्रों के विकास को बनाये रखने के लिए प्राकृतिक संसाधनों जैसे – जल, मृदा, वन इत्यादि के विवेकपूर्ण उपयोग के संबंध को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करते हैं।
				तृतीय	झारखंड में मृदा अपरदन, जल, जल उपलब्धता की समस्या, जल का उपयोग, जल संसाधनों का संरक्षण, प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन, प्राकृतिक वनस्पति का वितरण	14–22	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति	23–24	
3	खनिज और शक्ति संसाधन	25–42	जुलाई	प्रथम	खनिजों के प्रकार, विश्व में खनिजों का वितरण	25–31	• महत्वपूर्ण खनिजों जैसे – कोयला तथा खनिज तेल के वितरण को विश्व के मानचित्र पर अंकित करते हैं।
				द्वितीय	झारखंड के खनिज वितरण, खनिजों के उपयोग, खनिजों का संरक्षण, शक्ति संसाधन, परंपरागत स्रोत, कोयला, झारखंड में कोयला	32–33	
				तृतीय	पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस आदि उर्जा के परंपरागत स्रोत, उर्जा के गैर परम्परागत स्रोत, सौर उर्जा, पवन उर्जा, परमाणु उर्जा आदि	34–40	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति	41–42	
			अगस्त	प्रथम	पुनरावृत्ति	{ पृ.सं. 01 – 42 }	
				द्वितीय	पुनरावृत्ति		
				तृतीय	पुनरावृत्ति		
				चतुर्थ	पुनरावृत्ति		
			सितम्बर	प्रथम	पुनरावृत्ति		
				द्वितीय	पुनरावृत्ति		
				तृतीय	पुनरावृत्ति		

				चतुर्थ	संभावित प्रथम योगात्मक मूल्यांकन		
4.	कृषि	43–60	अक्टूबर	प्रथम	शिक्षक ने बताया, कृषि तंत्र, कृषि के प्रकार – निर्वाह कृषि	43–47	• अपने क्षेत्र/राज्य के प्रमुख फसलों, कृषि के प्रकारों तथा कृषि पद्धतियों का वर्णन करते हैं। • ऐसे कारकों का विश्लेषण करते हैं जिनके कारण कुछ देश प्रमुख फसलों जैसे – गेहूँ, चावल कपास, जूट इत्यादि का उत्पादन करते हैं। बच्चे इन देशों को विश्व के मानचित्र पर अंकित करते हैं।
				द्वितीय	स्थानांतरी कृषि, चलवासी पशुचारण, वाणिज्यिक कृषि, झारखंड में कृषि प्रकार एवं पद्धति	48–54	
				तृतीय	मुख्य फसलें, कृषि विकास, भारत का एक फार्म, संयुक्त राज्य अमेरिका का एक फार्म	55–58	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति	59–60	
			नवम्बर	प्रथम	पुनरावृत्ति	{ पृ.सं. 01 – 60 }	
				द्वितीय	पुनरावृत्ति		
				तृतीय	पुनरावृत्ति		
				चतुर्थ	पुनरावृत्ति		
5	उद्योग	61–78	दिसम्बर	प्रथम	कच्चे माल के आधार पर, आकार के आधार पर स्वामित्व के आधार पर, उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारक, औद्योगिक तंत्र, औद्योगिक प्रदेश	61–69	• कच्चे माल, आकार तथा स्वामित्व के आधार पर विभिन्न प्रकार के उद्योगों को वर्गीकृत करते है।
				द्वितीय	विश्व के प्रमुख उद्योग, लोहा इस्पात उद्योग, भारत में लोहा इस्पात उद्योग, जमशेदपुर भारत का पिट्सबर्ग, पिट्सबर्ग, सूती वस्त्र उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी, औद्योगिक आपदाएँ	70–75	
				तृतीय	अभ्यास, पुनरावृत्ति	76–78	
				चतुर्थ	शीतकालीन अवकाश	गृह कार्य { पृ.सं. 43 – 60 }	
6	मानव संसाधन	79–88	जनवरी	प्रथम	जनसंख्या का वितरण, जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक, झारखंड की जनसंख्या	79–81	• विश्व के मानचित्र पर जनसंख्या के असमान वितरण के कारणों की व्याख्या करते है।
				द्वितीय	जनसंख्या परिवर्तन, जनसंख्या परिवर्तन के प्रतिरूप, जनसंख्या का घनत्व, जनसंख्या संघटन, भारत की जनसंख्या	82–86	
				तृतीय	अभ्यास, पुनरावृत्ति	87–88	
				चतुर्थ	पुनरावृत्ति	{ पृ.सं. 01 – 88 }	
			फरवरी	प्रथम	पुनरावृत्ति		
				द्वितीय	पुनरावृत्ति		
				तृतीय	पुनरावृत्ति		
				चतुर्थ	पुनरावृत्ति		
			मार्च	प्रथम	पुनरावृत्ति		
				द्वितीय	पुनरावृत्ति		
				तृतीय	पुनरावृत्ति		
				चतुर्थ	द्वितीय योगात्मक मूल्यांकन		
मार्च : पुनरावृत्ति एवं द्वितीय योगात्मक मूल्यांकन							